ISSN - 2321 : 2160
International Peer-Reviewed Referred Journal
(Formerly in the list of UGC Approved Journals No. 47772)

AYUDH ISSN : 2321 : 2160

AYUDH

Volume-1

Special Issue on

भाषाशिक्षण और रोजगार के अवसर

Impact Factor : 3.1

February 2020

GUEST EDITOR

DR. JALINDAR INGLE
HEAD
DEPARTMENT OF HINDI

DR. DINESH SHIRUDE
PRINCIPAL

MSG COLLEGE
MALEGAON CAMP
DIST. NASHIK, MAHARASHTRA

ISSN : 2321-2160

AYUDH

International Peer-Reviewed Refereed Journal

Special Issue on

भाषाशिक्षण और रोजगार के अवसर

Volume-1 Impact 3.1 February-2020

Editor in Chief:
Mr. Rohit Parmar

Advisory Board

- Prof. H. N. Vaghela (Former Acting V. C.)
  Professor & Head,
  Department of Hindi,
  M. K. Bhavnagar University, Bhavnagar,
  Gujarat, India
- Prof. (Dr.) Chetan Trivedi
  Vice Chancellor
  Bhakta Kavi Narsinh Mehta University,
  Junagadh, Gujarat, India
- Dr. R. P. Bhatt
  Principal,
  H & H. B. Kotak Science College, Rajkot,
  Gujarat, India
- Prof. Jaydipsinh K. Dodiya
  Professor & Head,
  Department of English & CLS,
  Saurashtra University, Rajkot, Gujarat
  India
- Dr. Martina R. Noronha
  Principal,
  Sir K. P. College of Commerce, Surat
  Gujarat, India

Editorial Board

- Dr. Jiten J. Parmar (GES-II)
  Assi. Professor,
  Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh,
  Gujarat, India
- Mr. Dilip B. Kataliya (GES-II)
  Assi. Professor,
  Bahauddin Govt. Arts College, Junagadh,
  Gujarat, India
- Dr. Arjun G. Dave
  Founder & Owner
  Vedant Educational Services, Rajkot
  Gujarat, India
- Dr. Pravat Dangal
  Associate Professor,
  St. Joseph's College, Darjeeling,
  West Bengal, India
- Dr. Dnyaneshwar L. Sonawane
  Assi. Professor,
  Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya,
  Ambajogai, Dist. Beed, Maharashtra, India

INDEX

संपादकीय

1. हिंदी पत्रकारिता का योगदान
   प्रा.डॉ.जलिंदर इंगले — 1
2. भाषा, वैश्वीकरण, अनुवाद : एक रोजगार क्षेत्र
   डॉ.मा.ना.गायकवाड — 3
3. भाषा अध्ययन और सिनेमा
   डॉ. अनंत केदारे — 6
4. भाषा शिक्षण और दुरदर्शन
   डॉ. शरद भा. कोलते — 10
5. भाषा शिक्षा और सिनेमा
   प्रा. रविंद्र पुंजाराम ठाकरे — 12
6. हिंदी भाषा (शिक्षण) एवं रोजगार के अवसर
   डॉ. मोहन चव्हाण — 14
7. भाषा शिक्षण और जनसंचार माध्यम
   डॉ.पंडित बन्न — 16
8. हिंदी भाषा के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में रोजगार के सुअवसर
   प्रा. डॉ. व्ही. जी. राठोड — 18
9. भाषा शिक्षण और रोजगार के अवसर
   डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर) — 20
10. हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएं
    डॉ. वाल्मीक डी. सूर्यवंशी — 22
11. भाषा शिक्षण और अनुवाद : रोजगार के विविध अवसर
    डॉ. बबन चौरे — 25
12. हिंदी भाषा शिक्षण और रोजगार कि विविध संभावनाएँ
    प्रा.डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार – निकम — 27
13. हिंदी मीडिया : रोजगार प्राप्ति के अवसर
    प्रा.डॉ.योगेश विट्ठल दाणे — 30
14. जनसंचार माध्यम और रोजगार
    मेनका त्रिपाठी — 34
15. हिंदी काव्यानुवाद में निर्मित अनुवाद की समस्याएँ व समाधान
    (विशेष संदर्भ : बाबाराव मडावी का 'पाखरं' मराठी काव्य संग्रह)
    गिर्हे दिलीप लक्ष्मण — 37
16. हिन्दी भाषा और रोजगार के विविध आयाम
    डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा — 40
17. भाषा शिक्षण और रोजगार की विविध संभावनाएं
    प्रा.डॉ. सय्यद अमर फकिर — 43
18. भाषा शिक्षण के उपकरण
    डॉ. जालिंदर इंगल — 45
19. समकालीन कविता में युग-चेतना की अभिव्यक्ति
    डॉ.रॉय जोसफ — 47
20. भाषा शिक्षण और पत्रकारिता
    प्रा. श्रीमती वडगे वृषाली रंगनाथ — 51
21. भाषा शिक्षण और अनुवाद
    श्री शिरसाठ सुदाम शंना — 53
22. भाषा शिक्षण और अध्यापन के सामान्य सिद्धांत

हिंदी भाषा और रोजगार की संभावनाएं

डॉ. वाल्मीक डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कर्मवीर भाऊसाहेब हि.
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, निमगांव,
ता. मालेगांव जि. नाशिक

हिंदी हमारी राजभाषा है। संविधान के अनुच्छेद ३४३ (१) के अनुसार "संघ सरकार के सभी कार्य हिंदी में किये जाने है, अतः राजभाषा अधिनियम १९६३, राजभाषा संकल्प, १९६८ और राजभाषा नियम, १९७६ में हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी प्रावधान किये गये हैं, जो भारत सरकार के सभी कार्यालयों में लागू है। इस अनुक्रम में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन २६ जून, १९७५ को 'राजभाषा विभाग' की स्थापना की गई। हर जीवित भाषा में वैज्ञानिक, तकनीकी और रोजगार की संभावनाएं होती है। जबतक की भाषा स्वयं को संपन्न नहीं बनाती अपने आप में एक उपकरण नहीं बनती, तब तक वह अपनी सक्षमता को साबित नहीं कर पाती। विश्व अर्थव्यवस्था में आए व्यापक परिवर्तन भूमंडलीकरण सूचना क्रांति के पदार्पण तथा भारत के सबसे बड़े बाजार के रूप में प्रतिष्ठित होने की वजह से हिंदी जोखिम प्रबंधन, विपणन, वाणिज्य, व्यापार एवं मिडिया की भाषा के रूप में स्थापित होती जा रही है।

हिंदी हमारी राजभाषा है, राष्ट्रभाषा है, संपर्क भाषा है। हिंदी ने आज विश्व में संपर्क भाषा का स्थान ग्रहन किया है। उसी मात्रा में रोजगार का सृजन भी किया है। हिंदी को संविधान ने राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है। अतः भारत सरकार के सभी मंत्रालय, कार्यालय, विभाग और उपक्रमों में हिंदी के अनुपालनार्थ हिंदी अनुवादक अथवा सहायक राजभाषा अधिकारी और सहायक निदेशक के पदों का सृजन हुआ है। प्रयोजनमूलक हिंदी आधारित वाणिज्य प्रशासन एवं विदेश व्यापार के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं के जिन द्वारों को खोला है उन्हें दो स्तरों पर समझा जा सकता है।

राष्ट्रीय स्तरपर –

प्रशासन व सरकारी कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी –

संविधान के संशोधन १९६७ के अनुसार सभी सरकारी अधिकारीयों को कार्यालयीन कार्य को संपादित करने के लिए अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का उपयोग अनिवार्य होगा। आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रतिवेदन, प्रेस, विज्ञप्ति, निविदा, अनुबंध एवं विभिन्न प्रारूपों को हिंदी में बनाना तथा जारी करना अनिवार्य है। उसका सीधा सा अर्थ है कि केंद्र सरकार व राज्य सरकारों के सभी विभागों, उपविभागों में हिंदी अधिकारी, अनुवादक, प्रबंधक, उपप्रबंधकों के रूप में रोजगार की असीम संभावनाएं है। इसके लिए योग्यता कुछ इस प्रकार है–

१.स्नातक स्तर पर एक विषय के रूप में हिंदी के साथ ही अनुवाद के क्षेत्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

२. स्नातकोत्तर स्तर के साथ हिंदी अनुवाद एवं क्षेत्र।

हिंदी अनुवादक अथवा राजभाषा सहायक –

– हिंदी अनुवादक अथवा सहायक की भर्ती, कर्मचारी चयन आयोग (Staff Selection Commission) द्वारा की जाती है। जिन्हें भारत सरकार के कार्यालयों अथवा विभागों तथा मंत्रालयों में तैनात किया जाता है। इसके अतिरिक्त रेलवे भर्ती बोर्ड (Railway Recruitment Board) भी रेल मंत्रालय या क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा सहायक पदों के लिए योग्य उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जाते है।

– संसद (लोकसभा और राज्यसभा) में राजभाषा सहायक की परीक्षा का आयोजन संयुक्त भर्ती प्रकोष्ट (Joint Recruitment Cell) द्वारा किया जाता है।

–प्रतियोगिता परीक्षाओं द्वारा हिंदी अनुवादक अथवा राजभाषा सहायक भर्ती हिंदी अनुवादक अथवा राजभाषा सहायक की भर्ती का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता परीक्षाओं के माध्यम से निम्नगत पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है. जिसके विज्ञापन रोजगार समाचार अथवा Employment News में प्रकाशित किए जाते है, इसमें प्रश्नपत्र– १ अ) सामान्य ज्ञान राजभाषा

हिंदी (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) आ) हिंदी व्याकरण (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) इ) अंग्रेजी व्याकरण (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) प्रश्नपत्र –२ हिंदी और अंग्रेजी में अनुवाद करने की क्षमता। प्रश्नपत्र में दिए गए विषयों पर हिंदी और अंग्रेजी में निबंध लिखने की क्षमता।

बैंक अथवा वित्तीय संस्थानों में राजभाषा अधिकारी –

राष्ट्रीयकृत बैंकों में राजभाषा अधिकारियों की भर्ती बैंकिंग कार्मिक चयन संस्थान द्वारा की जाती है। हिंदी अनुवादों की पात्रता प्राप्त उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में हिंदी अधिकारी के पद नियुक्तियों के लिए आये दिन समाचार पत्रों में रिक्तियाँ प्रकाशित होती है। राष्ट्रीयकृत बैंकों में राजभाषा अधिकारी के पद पर कम से कम ०३ साल का अनुभव प्राप्त अधिकारियों का चयन भारतीय स्टेट बैंक (SBI) नाबार्ड भारतीय रिजर्व बैंक में किया जाता है। निजी क्षेत्र के बैंक जैसे आई.सी.आई.सी.आई., एच.डी.एफ.सी., बजाज फायनान्स आदि भी व्यवसाय विस्तार के लिए उपनगरों एवं ग्रामीण इलाकों में साधारण परिवेश के लोगों की भर्ती कर उन्हें प्रशिक्षित करके अपने नेटवर्क का विस्तार कर रहे है। इस नीति से न सिर्फ लगातार बढ़ रही मंदी को रोकने में मदद मिल रही है बल्कि ग्रामीण और उपनगरों के बेरोजगार युवकों को भी रोजगार मिल रहा है।

व्यावसायिक स्तर –

व्यावसायिक क्षेत्र में भी हिंदी भाषा को अपनाया जा सकता है। इन्टरनेट के माध्यम से कई विदेशी एजेन्सियों से अनुवाद के कई प्रोजेक्ट लिये जा सकते है। विभिन्न उपभोक्ता जैसे – वाशिंगमशीन, मोबाईल, मिक्सर, एअर कंडीशनर आदि उपकरण बनाने वाली कंपनियों को उनके उपयोग से संबंधित दिशा निर्देश पुस्तिका को बनाने के लिए हिंदी भाषा की आवश्यकता है। अपने उत्पाद के उपभोक्ता वर्ग का दायरा बढ़ाने के लिए उन्हें उपनगरों व ग्रामीण इलाकों तक पहुँचना होता है। आज किताबों के पाठक भी विभिन्न श्रेणियों के है। साहित्यिक पत्रिकाओं के आलावा विभिन्न विषयों पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है। राजनीति रोमांच, रहस्य, विज्ञान, फिक्शन आदि विषयों पर सामग्री की मांग मे जहाँ वृध्दि हुई है वही व्यक्तित्व विकास व सफलता के गुरूमंत्र बनाने वाली किताबों की मांग भी बढी है।

आकाशवाणी दूरदर्शन व सिनेमा –

आज दूरदर्शन क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहा है। विभिन्न निजी कंपनियों ने अपने स्थानीय आकाशवाणी चैनल खोल लिये है। दूरदर्शन पर निजी चैनलों की संख्या असीमित हो गई है जिनमें २४ घंटे कार्यक्रम प्रसारित करने की होड है। मनोरंजन उद्योग का सालाना टर्न ओवर करोडो में पहुँच चुका है। विभिन्न कार्यक्रमो के निर्माण, प्रसारण, संचालन व अभिनय के क्षेत्र में आज पहले से कहीं अधिक अवसर उपलब्ध है। आर. जे' बी.जे., डी.जे. के रूप में कार्यक्रम संचालक के तौर पर एक सुनहरे भविष्य के द्वार हिंदी के माध्यम से खुले है। कुछ प्रमुख करियर इस प्रकार है।– १) पटकथा लेखन २) संवाद लेखन ३) स्क्रिप्ट लेखन, ४) डबिंग आर्टिस्ट ५) गीत लेखन, ६) समाचार लेखन, वाचन, संपादन आदी। इन क्षेत्र में भी प्रशिक्षण लेकर एक उत्तम जिविका के रूप में इसे अपनाया जा सकता है।

विज्ञापन एजेंसी –

कॉपी राइटर, डबिंग आर्टिस्ट – विभिन्न विज्ञापन एजेन्सियों में हिन्दी कॉपी राइटर की अत्याधिक मांग है। भारतीय उपभोक्ता को आकर्षित करने के लिये उसकी भाषा व भावना की समझ आवश्यक है। इसके लिये www.shabdbraham.com वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

पत्रकारिता –

समाचार पत्रों व समाचार चैनलों की निरंतर बढ़ती हुई संख्या के कारण आज पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत डिनामिक हो गया है। सभी समाचार पत्रों व चैनलों को ऐसे लोगों (विशेषकर हिन्दी के संदर्भ में) की आवश्यकता है जो स्तरीय, सरल व शुध्द हिन्दी लिखना व बोलना जानते हों। संपादक, उपसंपादक, प्रूफरीडर आदि कई पदो पर हिन्दी भाषा में आज रोजगार उपलब्ध है।

इंटरनेट पर हिन्दी भाषा शिक्षण पाठों व पोर्टलों का निर्माण करना । उपर्युक्त विवेचन इस बात की उपयुक्त जानकारी उपलब्ध कराता है कि हिन्दी व हिन्दी भाषियों के लिये निराश होने जैसा कुछ नहीं है। आवश्यकता है इस उपलब्ध अवसर को भुनाने की। यदि हिन्दी को भुमंडलीकरण के पटल पर उभारना है तो उसे युग के वैज्ञानिक एवं तकनीकी नियमों के अनुरूप ढालना होगा तभी हिन्दी की प्रयोजनीयता का स्वरूप उभर कर सामने आएगा।

विश्व में भारत की मजबूत स्थिति व सबसे बड़े बाजार के रूप में परिवर्तन होने के कारण प्रत्येक देश व्यवसाय के विकास हेतु भारतीय उपभोक्ता को रिझाना महत्वपूर्ण मानता है। भारत का अधिकतर उपभोक्ता वर्ग उपनगरों एवं ग्रामीण इलाकों में फैला हुआ है और उन तक अपनी पहुंच बनाने

के लिये हिन्दी की जानकारी होना अनिवार्य है। साथ ही भारतीय संस्कृति अपने आप में एक ऐसा विषय है जिसे लेकर विश्व के लोगों के मन में सदैव जिज्ञासा होती है। वर्तमान समय में आयुर्वेद, योग और आध्यात्मिक ज्ञान ऐसे नये विषय है जो विदेशी खोजकताओं व शोधर्थियों को आकर्षित कर रहे है। अंत हिंदी भाषा का क्षेत्र रोजगार के लिए बहुत व्यापक है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) मिडिया लेखन सिध्दांत और व्यवहार – डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र

२) मिडिया लेखन – डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल

३) हिंदी पत्रकारिता – कल, आज और कल, डॉ. सुरेश गौतम, डॉ. वीणा गौतम

४) भारत में हिंदी पत्रकारिता – रमेश जैन

५) वेबसाईट –

www.rajbhasha.nic.in

www.ildc.gov.in

www.sscnic.in

www.employmentnews.in